विचार बिन्दु

सौंदर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे म्यान में तलवार। –रामकुमार वर्मा

हिन्दी फिल्मों का जुनून दफ़ा, सिनेमाघरों में दर्शकों का टोटा

ख़बर है कि भारतीय सिनेमा के लिए बीता 2024 साल अच्छा नहीं रहा। सिनेमा के बॉक्स ऑफिस पर निगाह रखने वाली एक एजेंसी के मुताबिक भारतीय सिनेमा की टिकट बिक्री से होने वाली आय उसके पिछले साल 2023 से तीन प्रतिशत कम रही क्योंकि कुल टिकटों की बिक्री इस वर्ष से छह प्रतिशत घट गई, अर्थात सिनेमा जाने वाले लोग कम हो गये। यह खबर चौकाती नहीं, क्योंकि नई सदी में मनोरंजन के अनेक माध्यम उपलब्ध हो जाने के बाद लोकप्रिय सिनेमा के रुतबे का घटना क्रम किसी से छुपा नहीं है। पिछली सदी में जब हिंदुस्तान में सिनेमा आया, तभी से यहां के लोग फिल्मों के दीवाने रहे हैं। ऐसी किंवदंतियां हैं कि हिन्दुस्तानी सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के की फिल्में जब दूर दराज के इलाकों में दिखाई जाती थी तब उनके टिकटों की बिक्री से होने वाली आय में मिलने वाली नकदी के सिक्के बैलगाडियों में भर-भर कर लाए जाते थे। पचास के दशक में जब हिन्दुस्तानी सिनेमा अपने पूरे शबाब पर आ गया तब सिनेमाघर में आठ-दस हफ्ते तो हर फिल्म चल ही जाती थी। सफल फिल्म का सौ दिन चलना सामान्य बात थी। पच्चीस हफ्ते की सिल्वर जुबली और 50 हफ्ते की गोल्डन जुबली के बड़े जश्न होते थे। अब तो एक हफ्ते से अधिक चलने वाली साल में दो-चार फिल्में होती हैं। वो ज़माने भी गये जब फिल्म देखना युवाओं में क्रेज़ होता था। परिवार का एक साथ फिल्म देखने जाना भी एक ईवेंट होता था। वह इस देश और यहां के बहुसंख्य लोगों के लिए गरीबी का दौर था, जिसमें सस्ते मनोरंजन का एकमात्र जरिया फिल्में ही होती थी। परिवारों को पहली तारीख का इंतजार रहता था क्योंकि उस दिन पगार मिलती थी। कोई 70 साल पहले 1954 में एक फिल्म बनी थी 'पहली तारीख', जिसमें किशोर कुमार का गाया गाना 'दिन है सुहाना आज पहली तारीख है/खुश है ज़माना आज पहली तारीख है', को सुन कर उस दौर को समझा जा सकता है। यह गाना रेडियो सीलोन पर आज भी प्रत्येक माह की पहली तारीख को उसी तरह नियमित बजता है, जिस तरह वहां प्रतिदिन पुरानी फिल्मों के गीत कार्यक्रम के अंत में कुंदनलाल सैगल का कोई गाना बजता है। 'पहली तारीख' के इस गाने का पहला अंतरा सुनें: 'बीवी बोली घर ज़रा जल्दी से आना/ शाम को पियाजी हमें सिनेमा दिखाना'। मनोरंजक सिनेमा की भारतीय समाज-परिवार में अंदर तक पहुंच थी। सिने-संगीत सिनेमाघरों से बाहर भी रेडियो और ध्वनि मुद्रिकाओं के जरिए घर-घर पहुंच कर फिल्मों को अतिरिक्त लोकप्रियता देता था। मगर नई सदी में ज़माना बदल गया। अब सिनेमा देखने के लिए सिनेमाघरों में जाने का जुनून नज़र नहीं आता। उनकी दीवानगी पहले जैसी नहीं रही, जब पहले दिन पहला शो देखने की होड लगी रहती थी या किसी फिल्म को बार-बार देखने जाना सामान्य बात होती थी। फिल्म देखने की वह 'रिपीट वेल्यू' ही उस जमाने में किसी फिल्म की व्यावसायिक सफलता तय करती थी। अब किसी फिल्म को कौन बार-बार देखता है। तब फिल्म से आमदनी का जरिया सिर्फ टिकटों की बिक्री होता था। संगीत की रॉयल्टी जरूर उसके अलावा होती थी। यह रिपीट वेल्यू अनेक कारणों से होती थी। फिल्म के पारिवारिक कथानक जो सभ्रांत परिवारों को सिनेमाघरों तक खींच लाते थे। इनसे साथ हास्य, रोमांस और मारधाड के रसिक दर्शक भी बॉक्स ऑफिस पर टूट पडते थे। सिने अभिनेता और अभिनेत्रियों की स्क्रीन प्रेजेन्स के अपने जलवे होते थे। हर वर्ग के अपने चहीता कलाकार होते थे। जैसे सबको लुभाने वाली तिकड़ी देव आनंद, राजकपूर, दिलीप कुमार। अभिनेत्रियों में मीना कुमारी, मधुबाला, नूतन। अन्य श्रेणी की फिल्मों के भी अपने लोकप्रिय अभिनेता होते थे। धार्मिक फिल्मों के त्रिलोक कपूर, ऐतिहासिक फिल्मों के जयराज और तलवारबाजी वाली फिल्मों के रंजन।

मगर अब, जैसा कि फिल्म व्यवसाय के नए आंकड़े दर्शाते हैं, देश में फिल्म देखने की लोगों की आदतें बदल गई हैं। इसी के चलते हमने पहले बड़ी सिटिंग क्षमता वाले सिंगल स्क्रीन सिनेमाघरों को विदा होते देखा और अब छोटे-छोटे मल्टीप्लेक्स में भी दर्शकों का टोटा पडने लगा है। लोगों की सिनेमा देखने की आदत बदलने में अनेकों कारक गिनाये जा सकते हैं। सबसे बड़ा कारक तो यही कि अब इफ़रात की अर्थव्यवस्था में माध्यम वर्ग की जेब में अपनी जरूरतें पूरी करने के बाद अतिरिक्त पैसा बचने लगा है जिसे पाने के लिए बाज़ार मनोरंजन के अनेक लुभावने माध्यम उपलब्ध कराने लगा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि बोरियत, मनोरंजन की ज़रूरत और सामाजिक अनुभवों की इच्छा सिनेमाघर जाने के लिए आंतरिक ट्रिगर का काम करती रही है, लेकिन मनोरंजन के अन्य विकल्पों-जैसे कि लाइव इवेंट, अनुभवात्मक गतिविधियों में शामिल होना और रेस्तरां जाना सिनेमा को कड़ी प्रतिस्पर्धा दे रहे हैं। सिनेमाघर में जाकर फिल्म देखने की बजाय अब दर्शक, टेलीविज़न या ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म जैसे मुफ़्त या कम लागत वाले विकल्पों को चुनने लगे हैं। विशेषज्ञ यह भी कहते हैं कि सिनेमा जाने की पुरानी आदत को बदलने में फ़िल्मों की गुणवत्ता की भी बड़ी भूमिका रही है। सरल सामाजिक और पारिवारिक फ़िल्में लगभग अनुपस्थिति हैं, खास कर हिन्दी फिल्म जगत में। देश में सिनेमा व्यवसाय का जैसा परिदृश्य अभी सामने है उसमें बॉलीवुड को गंभीर चुनौती मिल रही है। आंकड़े कहते हैं कि 2023 में केवल साढ़े 15 करोड़ भारतीयों ने सिनेमाघरों में कम से कम एक फिल्म देखी, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू बॉक्स ऑफिस पर कुल सवा 94 करोड़ लोग फिल्म देखने सिनेमाघर गये। इसका मतलब है कि हर सिनेमाघर जाने वाले व्यक्ति ने सालाना औसतन सिर्फ़ छह फ़िल्में देखी। हिंदी फ़िल्मों की संख्या प्रति व्यक्ति सिर्फ़ तीन रही। इसके विपरीत, तमिल और तेलुगु फ़िल्मों की औसत संख्या क्रमशः 8.1 और 9.2 रही। पिछले साल भारत के कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन में हिंदी सिनेमा का योगदान 2023 में 44 प्रतिशत की तुलना में 2024 में घटकर 40 प्रतिशत रह गया। आंकड़े यह भी बताते हैं कि 2024 में हिंदी सिनेमा के कलेक्शन का 31 प्रतिशत हिस्सा दक्षिण भारतीय फिल्मों के डब संस्करणों से आया। अगर केवल मूल हिंदी भाषा की फिल्मों पर विचार किया जाए, तो जहां फिल्म जगत में बॉक्स ऑफिस की कमाई का आधे से अधिक हिस्सा कभी हिन्दी फिल्मों का होता था वहां अब उनके बॉक्स ऑफिस में 37 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई मिलती है। गये साल बॉक्स ऑफिस पर कमाई करने वाली टॉप 20 फिल्मों में पांच तेलुगु, चार हिन्दी, तीन-तीन तमिल और मलयालम फिल्में हैं। इसका मतलब यह हुआ कि भारत के सिनेमा बाज़ार पर अब हिन्दी फिल्मों का दबदबा खत्म होता जा रहा है। इसे बहुत से लोग इस मायने में अच्छी बात मान रहे हैं कि क्षेत्रीय सिनेमा सम्पूर्ण भारत में सफल होता हुआ अपनी पहचान बना रहा है। उनके लिए यह खुशी की बात है कि मलयालम सिनेमा ने 2023 में अपने बॉक्स ऑफिस शेयर को 5 प्रतिशत से दोगुना करके 2024 में 10 प्रतिशत कर दिया, जो पहली बार 1,000 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया। तमिल और तेलुगु सिनेमा ने बड़े पैमाने पर अपना बॉक्स ऑफिस शेयर बनाए रखा। इसी प्रकार 84 करोड़ रुपयों का कलेक्शन करके, गुजराती सिनेमा ने 2023 की तुलना में 66 प्रतिशत की प्रभावशाली उछाल दर्ज की। स्थानीय सितारों और क्षेत्रीय स्वाद के अनुरूप सामग्री तथा दक्षिणी भारत के फिल्म उद्योग में उच्च निवेश ने वहां के सिनेमाघरों को गुलजार रखा, जबकि बॉलीवुड इसमें विफल होता नज़र आ रहा है। क्षेत्रीय फिल्मों की सफलतामें उनके सितारों के जलवे और तमाशे के अलावा, उनके विषय भी रहे।

यह स्पष्ट है कि सिनेमाघरों के टिकटों की ऊंची कीमतें, बड़े पैमाने पर नई फिल्मों के रिलीज़ की कमी और मुफ्त घरेलू मनोरंजन के ढेरों विकल्प लोगों को सिनेमाघरों से दूर कर रहे हैं। घर पर फिल्म देखने का एक किफायती और प्रतिस्पर्धी तरीका उपलब्ध होने से फिल्म दर्शकों का व्यवहार बदला है। इस बदलाव में कोरोना महामारी की बड़ी भूमिका रही है, जब घर से निकलना बंद था तब मनोरंजन के लिए सभी ऑनलाइन साधनों का उपयोग करने लगे और वह उनकी आदत में शुमार हो गया।

यह स्पष्ट है कि सिनेमाघरों के टिकटों की ऊंची कीमतें, बड़े पैमाने पर नई फिल्मों के रिलीज़ की कमी और मुफ्त घरेलू मनोरंजन के ढेरों विकल्प लोगों को सिनेमाघरों से दूर कर रहे हैं। घर पर फिल्म देखने का एक किफायती और प्रतिस्पर्धी तरीका उपलब्ध होने से फिल्म दर्शकों का व्यवहार बदला है। इस बदलाव में कोरोना महामारी की बड़ी भूमिका रही है, जब घर से निकलना बंद था तब मनोरंजन के लिए सभी ऑनलाइन साधनों का उपयोग करने लगे और वह उनकी आदत में शुमार हो गया। एक फिल्म वितरक और प्रदर्शक की टिप्पणी है कि पिछले दो दशकों में हिन्दी सिनेमा देखने के आम आदमी के अनुभव को आर्थिक रूप से दुर्गम बनादिए जाने से दर्शक सिनेमाघरों से दूर होते चले गये हैं। दूसरी तरफ ऐतिहासिक रूप से, देश के अन्य हिस्सों की तुलना में दक्षिण भारत में सिनेमा देखने की आदत बहुत मजबूत रही है, और महामारी के बाद भी यह जारी रही है। सिनेमाघरों से छिटकते दर्शक संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन सहित दुनिया भर के अन्य परिपक्व फिल्म बाजारों की भी समस्या हो रहे हैं। वहां भी स्ट्रीमिंग सेवाओं और होम थिएटर सेटअप के उदय के साथ, सिने दर्शक घर की सुविधा के पक्ष में सिनेमाघर जाना छोड़ रहे हैं, भले ही सिनेमाघर में फिल्म देखने का अनुभव घर पर पूरी तरह से दोहराया नहीं जा सकता हो। स्ट्रीमिंग सेवाओं के बड़े प्लेटफ़ॉर्म फिल्मों और सीरीज़ की विशाल लाइब्रेरी उपलब्ध कराते हैं, जिन्हें दर्शक कुछ ही क्लिक में देख सकता है अपनी सुविधा के समय और स्थान पर देख सकते हैं। जैसे-जैसे लोग घर पर ज़्यादा समय बिताते हैं -वर्क फ्रॉम होम करते हैं उससे भी घर से बाहर मनोरंजन की मांग कम हो गई है। अब फिल्में सिनेमाघरों तथा ओटीटी पर एक साथ रिलीज़ होती है। ऐसे में सिनेमाघर का रुख करने की पर वह कौन करे!

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

क्या भारत में वर्किंग ऑवर्स की बहस थम पाएगी.....

अविनाश जोशी

भारत में इन दिनों ड्यूटी ऑवर यानी कि कामकाजी घंटों को लेकर बहस जारी है। लार्सन एंड टूब्रो के चेयरमैन एसएन सुब्रह्मण्यम ने 90 घंटे काम करने की सलाह देकर इस बहस को गरमा दिया है। सुब्रह्मण्यम ने उत्पादकता बढ़ाने के लिए लंबे कामकाजी घंटों के विचार का समर्थन किया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि कर्मचारियों को रविवार को भी काम करना चाहिए।

भारत में पुरातन दकियानूसी सोच के तहत हर व्यक्ति लंबे समय तक कार्य करने की पद्धति को बेहतर कार्य शैली का पैमाना मानता है। इस सोच के कारण हमारा देश हमेशा उन लोगों को ज्यादा अहमियत देता है जो लंबे समय तक दिन में कार्य कर सके। आज के कॉरपोरेट जगत में कार्य की गुणवत्ता का आकलन करे तो एक बड़ी बहस छिड़ जाएगी। अमूमन हर कंपनी में कार्य के दिखावे का चलन कंपनी के आंतरिक स्वास्थ के लिए तकलीफ देह होता है।

आज के युग में वर्किंग ऑवर्स की बजाय कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगतिशील विचारों के बारे में सोचना चाहिए। अगर हो सके तो कार्यक्षेत्र में राजनीति, भ्रष्टाचार एवं भाई भतीजावाद के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। लार्सन एंड टुब्रो के चेयरमैन सुब्रह्मण्यन इससे एक कदम आगे निकल गए. उन्होंने यहां तक कहा कि उनका बस चले तो संडे को भी कर्मचारियों को दफ्तर बुलाएं, क्योंकि वह खुद रविवार के दिन काम करते हैं. वर्क लाइफ बैलेंस पर बहस अपनी जगह है, लेकिन हम यहां वर्किंग ऑवर्स पर बात करेंगे। क्या कंपनियां अपने कर्मचारियों से मनमर्जी से काम करा सकती हैं? भारत में वर्किंग ऑवर्स पर कानून क्या है? अगर कंपनियां काम के बदले उचित पैसा न दें तो क्या करें, कहां शिकायत करें आइए जानते हैं...

भारत में श्रम कानून लागू है। इस कानून के अनुसार लोगों के अधिकतम काम के घंटे निर्धारित हैं और कोई भी कंपनी इससे ज्यादा काम अपने कर्मचरियों से नहीं ले सकती है। श्रम कानून के फैक्ट्रीज एक्ट में कहा गया है कि भारत की फैक्ट्रियों और उत्पादन इकाईयों में एक दिन में अधिकमत 8 से 9 घंटे ही काम कराया जा सकता है। हालांकि, एक सप्ताह में काम 48 घंटे से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इसका सीधा मतलब है कि कोई भी कंपनी अधिकतम छह दिन में 48 घंटे ही काम करा सकती है।

कुछ ऐसी कंपनियां भी हैं, जहां कर्मचारियों से ओवरटाइम कराया जाता है। हालांकि, कंपनियों को इस ओवरटाइम के बदले कर्मचारियों को उचित भुगतान भी करना होता है। श्रम कानून के मुताबिक, ओवरटाइम भी सप्ताह में कुल 60 घंटे से ज्यादा नहीं होना चाहिए। यहां तक कि अधिकमत पांच घंटे काम के बाद कम से कम एक घंटे का ब्रेक देना भी जरूरी है।

श्रम कानून में कोई भी कंपनी कानून का उल्लंघन करती है, यानी कर्मचारियों से जबरन निर्धारित घंटों से जयादा काम करवाती है, तो कंपनी या फैक्टरी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। कानून के उल्लंघन पर अधिकमत दो साल की सजा या फिर एक लाख तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

भारत में गुलामी के एक लंबे दौर के बाद दुनिया भर में कई मजदूर आंदोलन हुए। तब जाकर कामगारों के लिए कुछ कानून बनाए गए। काम के घंटे तय हुए, ये तय हुआ कि मजदूरों के मानसिक और शारिरिक स्वास्थ्य को एकनॉलेज किया जाए। वर्क-लाइफ-बैलेंस की बात हुई। भारत में उद्योग क्षेत्र के कुछ बड़े लोगों ने इस संघर्ष के दौर को धता बताने का प्रयास किया। इस कड़ी में सबसे पहली बोली लगाई, इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति ने. फिर लार्सन एंड टुब्रो के चेयरमैन एसएन सुब्रह्मण्यन ने एक कदम आगे बढ़ते हुए और बड़ी बोली लगाई।

मूर्ति ने कहा कि भारत में लोगों को सप्ताह में 70 घंटे काम करना चाहिए, तो वहीं सुब्रह्मण्यन ने कहा कि लोगों को 90 घंटे काम करना चाहिए और वीकेंड पर भी काम करना चाहिए। मूर्ति ने कहा था कि चीन जैसे देश से आगे निकलने के लिए भारत के युवाओं को इतना काम करना पड़ेगा, तो चीन से ही शुरू करते हैं।

अगर सप्ताह में 5 दिन काम करें तो, मूर्ति के हिसाब से हर दिन 14 घंटे और सुब्रह्मण्यन के कहे मुताबिक हर दिन 18 घंटे काम करना होगा। अगर सप्ताह के 7 दिन भी काम करें तो भी इनके अनुसार, क्रमशः हर दिन 10 घंटे और करीब 13 घंटे काम करना होगा। चीन के लेबर कानून के मुताबिक, एक व्यक्ति को दिन 8 घंटे ही काम कराया जा सकता है और पूरे सप्ताह में 40 घंटे से ज्यादा काम नहीं कराया जा सकता। और अगर किसी स्थिति में इससे ज्यादा काम करना पड़ा, तो कंपनी को इसके लिए ओवरटाइम का पैसा अलग से देना होता है।

अमेरिका के अधिकतर राज्यों में भी ऐसा ही नियम है। जबकि कुछ राज्यों में तो इससे बेहतर प्रावधान हैं। जैसे कि कुछ राज्यों में हर एक घंटे काम करने के बाद आप 10 मिनट का ब्रेक ले सकते हैं। साथ ही ये भी सुनिश्चित किया जाता है कि कर्मचारियों को सप्ताह में कम से कम एक दिन की छुट्टी जरूर मिले।

वर्किंग ऑवर्स के बयान ने सोशल मीडिया पर एक बहस छेड़ दी है। 90 घंटे सप्ताह में काम करने के बयान के बाद एलएंडटी के चेयरमैन एसएन सुब्रमण्यन ट्रोल भी हो रहे हैं। लोगों का ये मानना है कि अगर 90 घंटे सप्ताह में काम करेंगे, तो फिर घर या अन्य कामों के लिए वक्त ही कहां बचेगा? इस चर्चा में कई दिग्गजों ने अपनी बात रखी है। इसी बीच, कैपिटलमाइंड के संस्थापक और सीईओ दीपक शेनॉय ने प्रोडक्टविटी और वर्क लाइफ बैलेंस पर अपनी बात शेयर की है।

शेनॉय ने एक्स पर अपनी पोस्ट में लिखा है, मैंने अपने पूरे कार्यकाल में शायद सप्ताह में 100 घंटे काम किया है, लेकिन उसमें से अधिकांश काम मैंने एक कारोबारी के रूप में की। आपको काम के घंटे लागू करने की जरूरत नहीं है, जो लोग प्रेरित हैं वे खुशी से काम करेंगे। किसी भी मामले में ज्यादातर वास्तविक काम दिन में 4-5 घंटे में होता है, लेकिन आपको नहीं पता कि यह कब होता है.आज जरूरत है हमें इन वास्तविक कार्य को आइडेंटिफाई करने की।

अगर हम विश्व के अन्य देशों के वर्किंग ऑवर्स की बात करे तो एक सप्ताह में जर्मनी में 35 से 40 घंटे, फ्रांस में 35 घंटे लेकिन स्वीडन में 30 से 35 घंटे का समय तय है। लेकिन भारत आज भी कार्य को लंबे समय में पूर्ण करने को अच्छा मानता है यह मापदंड की बार बेमानी लगती है। अगर हम जिंदगी की अनेक विद्याओं को जीना चाहते है, हमेशा परिवार के साथ मुस्कुराना चाहते है, स्वस्थ एवं मस्त रहना चाहते है, विश्व भ्रमण करना चाहते है एवं कभी कभी अच्छा संगीत भी सुनना चाहते है तो फिर समय तो चाहिए और समय केवल ओर केवल सप्ताह में से ही निकालना पड़ेगा।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक।

पांच दिवसीय भीलवाड़ा नाट्य महोत्सव का समापन

भीलवाड़ा। रसधारा सांस्कृतिक संस्थान द्वारा आसीएम एवं नगर निगम भीलवाडा के सहयोग से डॉ. अर्जुनदेव चारण के सम्मान में आयोजित पांच दिवसीय भीलवाड़ा नाट्यय महोत्सव का राजस्थानी नाटक 'गोरधन के जूते' के मंचन के साथ समापन हुआ।

रसधारा के साक्षात् ऑडिटोरियम में बूढ़े बोल नाम से एक इंप्रोवाइजेशन प्रस्तुति दी गई, जिसमें रसधारा के गोपाल आचार्य, अनुराग सिंह, शिवांगी बैरवा, प्रभु प्रजापत, शिल्पी माथुर, केजी कदम, नंदू शर्मा ने सीधे संवाद प्रस्तुत किए। रंग संवाद सत्र में रंग विशेषज्ञों ने नाट्यय विद्या के विविध विषयों पर अपने-अपने विचार रखे। 'मुझे मेरे नाप के ही जूते चाहिए, मैं जूते को पीछे से मोड़कर नहीं पहन सकती', यह संवाद है क्रिटिकल प्रोडक्शन जयपुर की टीम द्वारा युवा रंगकर्मी देशराज गुर्जर निर्देशित-लिखित नाटक 'गोरधन के जूते' की चरित्र मथरा नाम की लड़की का, जो अपने असामान्य रूप से बड़े पैरों के कारण सामाजिक मानदंडों के अनुरूप नहीं है। इस नाटक की कहानी मथरा की शादी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो उसके दादा ने बचपन में ही तय की थी। जैसे-जैसे शादी नजदीक आती है, दोनों परिवारों को मथरा के बड़े पैरों में फिट होने के लिए जूते ढूंढने की दुविधा का सामना करना पड़ता है। यह छोटा सा मुद्दा एक बड़ी समस्या में बदल जाता है, जो सामाजिक दबावों और पूर्वाग्रहों को दर्शाता है, जिसमें एक स्वाभाविक सा हास्य उत्पन्न होता है, जो दर्शकों को गुदगुदाता है। जूते की खोज के दौरान कथा लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा और महिलाओं की समस्याओं जैसे विभिन्न विषयों को छूती है। जैसे-जैसे कहानी सामने आती है, मथरा के बास्केटबॉल खिलाड़ी बनने के सपने सामने आते हैं। हालांकि, उसने परिवार के सम्मान को बनाए रखने और अपने दादा के वादे को पूरा करने के लिए अपनी आकांक्षाओं का त्याग किया था।

नाट्य महोत्सव के दौरान कलाकारों ने कार्यक्रम पेश किये।

■ डॉ. अर्जुनदेव चारण के सम्मान में आयोजित महोत्सव का राजस्थानी नाटक 'गोरधन के जूते' के मंचन के साथ समापन हुआ

नाटक पारंपरिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच टकराव को मार्मिक रूप से चित्रित करता है। नाटक का अंत मथरा के राष्ट्रीय बास्केटबॉल टीम में उसके चयन का हवाला देते हुए शादी करने से इनकार करने के इर्द-गिर्द घूमता है। वह ऐसे जूते पहनने के अपने अधिकार का दावा करती है जो उसे फिट करते हैं, आत्म अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता की उसकी इच्छा का प्रतीक है। नगर निगम टाउन हाल में दर्शकों ने तालियों के साथ रसधारा के इस समारोह के शानदार आयोजन की सराहना की एवं भविष्य ने इस प्रकार के आयोजनों की निरंतरता बनाये रखने का आग्रह किया।

मकर संक्रांति पर श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में आस्था की डुबकी लगाई

अजमेर/ पुष्कर, (कासं)। पौष माह में मकर संक्रांति पर्व मंगलवार को शहर सहित जिलेभर में उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। महिलाओं ने घरों में विधि-विधान से पूजा अर्चना की, मंदिरों में मंत्रोच्चार भजनों की गूंज रही। लोग दिन भर दान-पुण्य में जुटे रहे। गाय-बछड़ों को हरा चारा, गुड़ बांटा गया और दलिया खिलाया गया, कई लोगों ने पतंग उड़ाई। सुहागन महिलाओं ने अपने पति के दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की कामना के लिए 13 वस्तुओं का दान किया। वहीं तीर्थ नगरी पुष्कर के सरोवर में श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर दान-पुण्य किया।

अजमेर शहर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में लोग मंगलवार अल सुबह से ही मंदिरों में पूजा-अर्चना करने पहुंच गए। महिला-पुरुषों ने विधि-विधान से पूजन कर भगवान को भोग लगाया। घरों में भी पारंपरिक तरीके से पूजन किया गया। महिलाओं ने तेरुंडा की रस्म निभाकर 13 सुहागिन महिलाओं को 13 वस्तुओं का दान कर घर परिवार में खुशहाली की कामना की। शहर में कई जगहों पर पकौड़े, हलवे का प्रसाद के रूप में वितरण किया गया। महावीर सर्किल गरीब अहसायों को कपड़ों का दान किया तो वहीं पक्षियों के दान डाला गया।

महिलाओं ने सुहागिन महिलाओं को तेरूंडे की सामग्री का दान कर घर परिवार में खुशहाली की कामना की। तिल के लड्डू, गजक, रेवड़ी और अन्य मिठाई से भोग लगाया। शहर में कई स्थानों पर पकौड़े हलवे का वितरण किया गया। कई जगह खानाबदोश और जरुरतमंदों को कम्बल, शॉल और ऊनी वस्त्र बांटे गए।

शहर के कई स्थानों पर श्रद्धालुओं सहित सामाजिक व धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने गाय को हरा चारा खिलाया, इसके अलावा गंज, बजरंगगढ़ और अन्य स्थानों पर पक्षियों को दाना डाला गया। श्री अम्बे सेवा समिति वृद्धाश्रम हरिभाऊ उपाध्याय नगर के वरिष्ठ नागरिकों ने गोशालाओं के लिए सामग्री एकत्र की। बड़ी नागफणी गोपाल कुंड मंदिर बोराज स्थित श्री आनन्द गोपाल गौ शाला के पदाधिकारियों द्वारा मकर संक्रांति के अवसर पर गौशाला के लिए दान एकत्रित किया गया। गौ शाला के अध्यक्ष कालीचरणदास खंडेलवाल और महासचिव रमेश लालवानी ने बताया है कि कोषाध्यक्ष इन्दरचन्द पोखरना के मोबाईल पर सूचना देने पर दान अथवा सामग्री एकत्रित करने के प्रबंध किए।

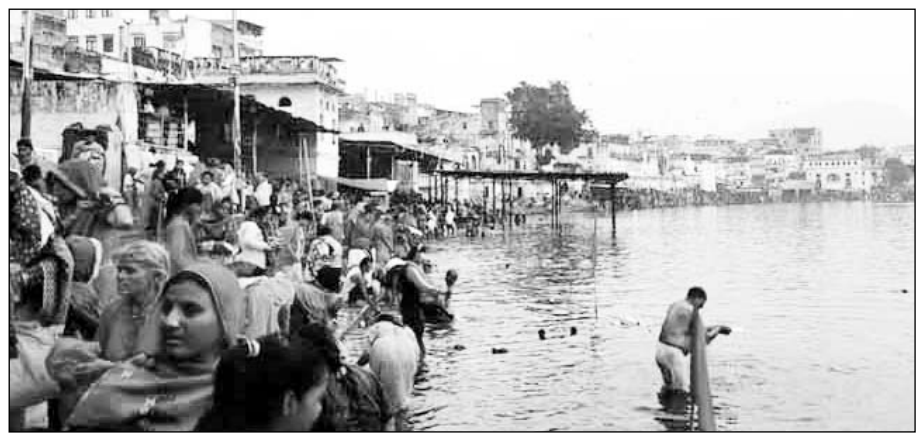

पुष्कर सरोवर में श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाकर पुण्य कमाया।

■ दान-पुण्य के साथ मनाया मकर संक्रांति का पर्व, पशुओं को चारा खिलाया, पक्षियों को दाना डाला

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग अजमेर द्वारा प्रथम जिन देव दर्शन एवं मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर तीर्थक्षेत्र ज्ञानोदय नारेली में निवास कर रही 1400 से अधिक अशक्त गोवंश को हराचारा, गुड एवं औषधियुक्त लड्डू खिलाए। पूज्य झरनेश्वर महादेव मन्दिर में सिन्धी मंडल के तत्वावधान में अध्यक्ष नारी भाई देवानी और उपाध्यक्ष शंकर छत्तानी के नेतृत्व में संक्रांति के पर्व पर झरनेश्वर महादेव मंदिर में भंडारे का आयोजन हुआ।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 15 जनवरी, 2025

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र दिन 10:28 तक, प्रीति योग रात्रि 1:56 तक, तैतिल करण दिन 3:23 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग दिन 10:28 तक है। आज थल सेना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:54 तक, शुभ 11:17 से 12:36 तक, चर 3:13 से 4:32 तक, लाभ 4:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:51

मेष

परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों एवं आय में प्रगति/वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

धनु

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मकर

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगर। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।